कृषि वानिकी का स्थानिक मेंढकों पर प्रभाव

स्रोत: द हिंदू

हाल ही में **नेचर कंज़र्वेशन फाउंडेशन (NCF-इंडिया)** और **बॉम्बे एनवायरनमेंटल एक्शन ग्रुप (BEAG)** द्वारा किये गए एक अध्ययन में उत्तरी **पश्चिमी घाट में स्थानीय मेंढकों की प्रजातियों** पर **कृषि वानिकी** के प्रभाव का आकलन किया गया।

- **अध्ययन के निष्कर्ष: धान के खेतों में उभयचरों** की विविधता में अधिक कमी पाई गई; हालाँकि **अप्रभावित पठारों में** यह अधिक थी जबकि बागों में यह सबसे कम थी।
    - **CEPF स्थानीय मेंढक की बिल खोदने वाली प्रजाति (Frog burrowing species)** (*[illegible]*) और **गोवा फेजेरवेरा** (*[illegible]*) जैसी **स्थानीय प्रजातियाँ** संशोधित आवासों में कम प्रचुर मात्रा में थीं।
    - *[illegible]* जैसी सामान्य प्रजातियाँ **धान के खेतों** में अधिक पाई गईं, जो **आवास-प्रेरित बदलावों का** संकेत है।
- **पश्चिमी घाट: लैटेराइट पठारों (लौह और एल्युमीनियम** से समृद्ध समतल शीर्ष वाले भूदृश्य) से निर्मित **पश्चिमी घाट का** निर्माण लाखों वर्ष पूर्व **ज्वालामुखी संचलन के माध्यम से हुआ था।**
    - यह एक जैवविविधता वाला **हॉटस्पॉट** है, यहाँ 226 मेंढकों समेत लगभग **252 उभयचर प्रजातियाँ पाई जाती हैं।**
    - हालाँकि वैश्विक स्तर पर, **40.7%** उभयचर प्रजातियाँ (8,011 प्रजातियाँ) **निवास स्थान के विनाश, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन** और **चिट्रिडिओमाइकोसिस** जैसी बीमारियों के कारण **संकट में हैं।**

और पढ़ें: चार्ल्स डार्विन का मेंढक

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/agroforestry-s-impact-to-endemic-frogs